नया ज्ञानोदय

जून-जुलाई 2026
मूल्य : 50 रुपये

भारतीय ज्ञानपीठ

भारतीय ज्ञानपीठ

संस्थापक

श्रीमती रमा जैन
श्री साहू शांति प्रसाद जैन

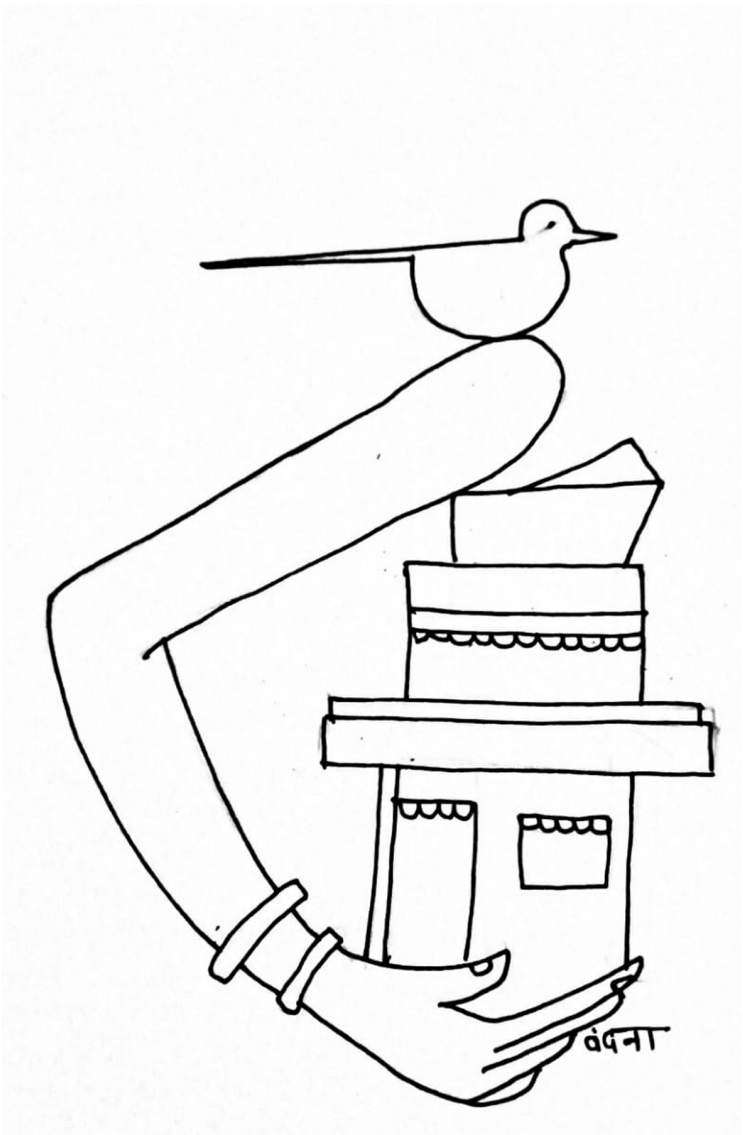

सम्पादक

महेश्वर

प्रबंध-सम्पादक

आर.एन. तिवारी

नया ज्ञानोदय

साहित्य, समाज, संस्कृति और कलाओं पर केंद्रित

अंक: 239, जून-जुलाई 2026

नया ज्ञानोदय

साहित्य, समाज, संस्कृति और कलाओं पर केंद्रित

अंक: 239, जून-जुलाई 2026
पृष्ठः 84 (आवरण सहित)

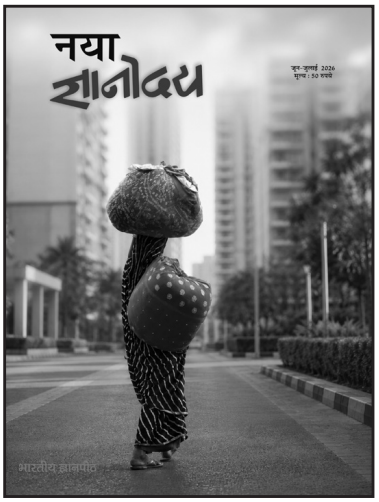

साहू अखिलेश जैन
प्रबन्ध न्यासी, भारतीय ज्ञानपीठ

प्रकाशकः **भारतीय ज्ञानपीठ**
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-110 003
फोनः 011-2462 6467, 2469 8417, 4152 3423
ई-मेलः nayagyanoday@gmail.com,
bookclub@jnanpith.net,
gmbharatiyajnanpith@gmail.com

वेबसाइटः **www.jnanpith.net**

Naya Gyanodaya
A Literary Bi-monthly Magazine
Editor: **Maheshwar**
Language: **Hindi**
Published by **Bharatiya Jnanpith**
18, Institutional Area, Lodi Road, New Delhi-110 003

मूल्यः
50 रुपये + 16 रुपये (डाक खर्च)

व्यक्तियों/संस्थाओं के लिए:
वार्षिक (6 अंक): 420 रुपये (डाक खर्च सहित, साधारण डाक से)
वार्षिक (6 अंक): 730 रुपये (डाक खर्च सहित, रजिस्टर्ड डाक से)

नया ज्ञानोदय की ई-प्रति www.notnul.com पर उपलब्ध है।

शुल्क 'भारतीय ज्ञानपीठ' (**Bharatiya Jnanpith**) के नाम से, उपर्युक्त पते पर चेक या बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से भेजें।

© सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है।
प्रकाशित रचनाओं के विचार से भारतीय ज्ञानपीठ का सहमत होना आवश्यक नहीं।
समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

सम्पादक
महेश्वर

प्रबंध-सम्पादक
आर.एन. तिवारी

नया ज्ञानोदय

अंक: 239, जून-जुलाई 2026

इस अंक में

अभिमत 4

सम्पादकीय : संग-साथ : महेश्वर 05

आलेख

लोकतंत्र की शासन प्रणाली और साहित्य की स्वायत्तता : मृदुला गर्ग 06

कहानी

चन्द्रकिशोर जायसवाल : फ़र्ज़ 10

हरि भटनागर : पंडूक 16

अर्चना पैन्यूली : अनकहे रिश्ते 20

सूरज सिंह नेगी : ओ ईजा... 24

जूमइन

निशान्त की कविताएं 31

कवि पल्लव

त्रिलोक महावर की कविता 'चवन्नी' 34

जर्मन कहानी

थॉमस मान : मोह भंग (अनु.: शिप्रा चतुर्वेदी) 36

मराठी कविता के युवा स्वर 40

रवि कोरडे, प्रेषित सिद्धभट्टी, हनुमान व्हरगुले, अनिल साबले, फेलिक्स डिसोजा (अनु.: सुनीता डागा)

आलेख

कृष्णमृग रूप : वैदिक वनस्पतियों का आख्यान और भूगोल : अभय तिवारी 48

आगत

जीवन साधना का अभिनन्दन 22

जेएनयू के नामवर : गरिमा श्रीवास्तव 55

कहना न होगा

नक़्शों में दरारों का साम्राज्य : लीलाधर मंडलोई 56

कहा-कही

संवेदना और विचार के संगम से निकली किस्सागोई : पंकज शर्मा 58

गुडरीड्स

साहित्य को पढ़ने का तरीका! : वैभव सिंह 62

क्रॉस बॉर्डर

पूरब की बेटी, पश्चिम की आभा : दुष्यन्त 64

सबरंग

ध्रुपद मेला : परंपरा, साधना और संगीत का अनश्वर उत्सव : राजेन्द्र शर्मा 66

सेल्यूलॉयड चैप्टर

सवाक् सिनेमा (टॉकीज़) का आग़ाज़ और सिनेमाई ध्वनि के पदचिन्ह : विभावरी 70

मुलाकात

गोविंद मिश्र से हरि ओम की बातचीत 73

पुस्तक समीक्षा

जब किताब ग़ज़ल गुनगुनाने लगे : धनंजय चोपड़ा 78

प्रेम और मनुष्यता का पुनर्पाठ : विजया सती 80

साहित्यिक हलचल 39

आवरण : बंशीलाल परमार, रेखांकन : वंदना पवार, साज-सज्जा : ज्ञानपीठ कला प्रभाग

अभिमत

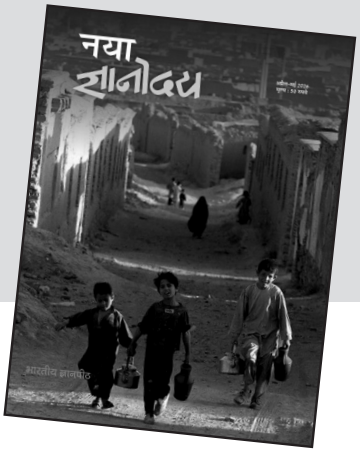

'नया ज्ञानोदय' के अप्रैल-मई 2026 के साहित्यिक स्तर के हिसाब से एक भव्य अंक के संपादन की आपको बधाई। लेखकों के संस्मरण वाले अंक के बाद ये दूसरा अंक है जिसका अधिकांश भाग मैंने पढ़ा है। एक से एक स्तरीय कहानियाँ, ज्योति चावला की कविताएँ, आज के माहौल में युद्ध पर आधारित कविताओं के अनुवाद–सब कुछ अविस्मरणीय है।

मधुसूदन आनंद जी के विषय में मैं बहुत कम जानती थी। उनके विषय में बहुत कुछ जानने को मिला। भविष्य में भी हमें ऐसी उत्कृष्ट रचनाएँ पढ़ने को मिलेंगी, शुभकामनाएं।

–नीलम कुलश्रेष्ठ
अहमदाबाद, गुजरात

'नया ज्ञानोदय' के नवीन अंक में प्रकाशित भालचंद्र जी की कहानी 'गुमशुदा नींद' पढ़ी। कहानी का असर धीरे-धीरे मन पर उतरता है और अंतिम पृष्ठ तक पाठक को अपने साथ बनाए रखता है। अतीत की स्मृतियों में उलझे अनाम रिश्तों की यह कथा अपने सस्पेंसपूर्ण अंत के कारण विशेष रूप से प्रभावित करती है।

कहानी के कई वाक्य देर तक मन में गूंजते रहते हैं–

"भक्ति में भूख लगती है, प्रेम में भूख मर जाती है।"

"दुख बताने से अभिमान का कद छोटा हो जाता है।"

ऐसी संवेदनशील और प्रभावशाली रचना के प्रकाशन हेतु लेखक तथा पत्रिका–दोनों को हार्दिक बधाई।

–सुनील सक्सेना
भोपाल, म.प्र.

महेश्वर जी, आपके सम्पादन में आये 'नया ज्ञानोदय' के अप्रैल-मई 2026 अंक में आपके सम्पादकीय कौशल की झलक साफ़ नज़र आ रही है! बदले हुए ले-आउट में रचनाओं की प्रस्तुति आकर्षक है! 'नया ज्ञानोदय' के इस बदलाव का स्वागत है!... बधाई आपको!

–राजेन्द्र लहरिया,
ग्वालियर, मध्यप्रदेश

सबसे पहले तो आपको संपादक बनाने की असीम शुभकामनाएं। अंक शानदार निकला है। संतोष है कि पत्रिका की बागडोर आपने सम्भल ली है। अंक में सबसे पहले जूमइन में छपी ज्योति चावला की कविताओं की तरफ ध्यान आकर्षित हुआ। ऐतिहासिक घटनाओं पर कविता लिखना कठिन है। आज ऐसी कविताएं पढ़ने के लिए कम ही मिलती हैं। ज्योति चावला की कविताएं स्त्री जीवन की मार्मिक कथा के रूप में पेश हुई है। 'बेटे से संवाद' कविता भी बहुत अच्छी लगी। युद्ध केंद्रित कविताएं भी पसंद आई। अंक का संपादन संयोजन भी साफ-सुथरा दिख रहा है। कमी केवल पुस्तक समीक्षा की रह गई है। उम्मीद है आगे के अंक में यह कमी दूर होगी।

भारती
हिंदी अधिकारी, पंजाब एंड सिंध बैंक, दिल्ली

महेश्वर जी के संपादन का नया ज्ञानोदय (अप्रैल-मई 2026) अंक प्राप्त हुआ! अंक कई तरह से उल्लेखनीय है! संपादकीय संग-साथ में उनकी मौलिक दृष्टि दिखती है! विष्णु नागर ज़ी का मधुसूदन आनंद ज़ी पर हृदय स्पर्शी संस्मरण है! 'कहा-कही' और 'परस्पर' स्तम्भ आलोचना और परिचर्चा के नये अच्छे स्तम्भ हैं! विश्व साहित्य तो नया ज्ञानोदय में पूर्व क़ी तरह है...जो बहुत जरूरी है...आपने नये अनुवादकों क़ो आमंत्रित भी किया है...यह स्वागत योग्य है।

शशिभूषण बडोनी,
देहरादून, उत्तराखंड

नया ज्ञानोदय के मई अंक में महानगरों के कुछ 8-10 बहुप्रकाशित नामों व चित-परिचितों को ही पूरे देश का 'ज्ञानोदयी' मान लिया गया है–जैसे किसी हड़बड़ी या शार्टकट में अंक लाना ही हो। लेकिन तारीफ़ करनी होगी कि संपादक ने अपने पूर्ववर्ती और सुयोग्य संपादकों का स्मरण तहेदिल से किया है। निश्चय ही भविष्य में 'ज्ञानोदय' होगा महेश्वर जी पर पूरा विश्वास है। वे समर्थ व व्यापक दृष्टि वाले हैं ही।

जयप्रकाश मानस
रायपुर, छत्तीसगढ़

नया ज्ञानोदय का अप्रैल मई (2026) अंक हाथ में आते ही इसका समूचा कलेवर बदला हुआ दिखाई पड़ा। शुरूआती पन्ने पर नजर गई तो देखा संपादक बदल गए हैं। महेश्वर जी की मेहनत पहले अंक से ही साफ दिखाई पड़ने लगी है। उन्होंने जिस तरह से नए स्तम्भों की शुरुआत की है, उससे उनका विजन समझ में आता है। अंक में कहानियां और लेख अच्छे लगे। ज्योति चावला और युद्ध केंद्रित कविताओं ने मन मोह लिया। ऐसी कविताएं समय की मांग हैं। हर लिहाज से नया ज्ञानोदय का यह अंक संग्रहणीय है।

तान्या लांबा
शाहदरा, दिल्ली